bdkbZ 1 jktuhfr-fl)kar D;k gS(blds v/;;u D;ksa djsa\

bdkbZ dh :ijs[kk

1.1 प्रस्तावना

1.2 राजनीति–सिद्धांत क्या है?

- 1.2.1 सिद्धांत क्या है?
- 1.2.2 राजनीति–सिद्धांत : निहितार्थ
- 1.2.3 राजनीति–सिद्धांत : अन्तर्वस्तु

1.3 राजनीति–सिद्धांत की प्रकृति

- 1.3.1 राजनीति–सिद्धांत इतिहास के रूप में
- 1.3.2 राजनीति–सिद्धांत दर्शन के रूप में
- 1.3.3 राजनीति–सिद्धांत विज्ञान के रूप में

1.4 राजनीति–सिद्धांत : विकास व उत्पत्ति

- 1.4.1 व्यापक (Classical) राजनीति–सिद्धांत
- 1.4.2 आधुनिक राजनीति–सिद्धांत
- 1.4.3 समकालीन राजनीति–सिद्धांत

1.5 राजनीति–सिद्धांत का अध्ययन क्यों करें?

- 1.5.1 राजनीति–सिद्धांत के समक्ष कार्य
- 1.5.2 राजनीति–सिद्धांत का महत्त्व

1.6 सार–संक्षेप

1.7 अभ्यास

1-1 iLrkouk

राजनीति–सिद्धांत राजनीति–संबंधी / राजनीति–विषयक कोई *परिकल्पना* मात्र नहीं है, यह राजनीति का *विज्ञान* और राजनीति का *तत्त्वज्ञान* दोनों भी है। एक परिकल्पना के रूप में, ब्लूहैन स्पष्ट करते हैं, राजनीति–सिद्धांत ''राजनीतिक व्यवस्था का एक अमूर्त आदर्श... राजनीतिक आँकड़ों के एक क्रमबद्ध संग्रह एवं विश्लेषण हेतु एक परिदर्शक का प्रतीक है'' (*थिअरीज़ ऑफ पॅलिटिकॅल सिस्टम,* 1981)। एण्ड्र्यू हैकर, इस दृष्टिकोण को विस्तार देते हुए, कहते हैं कि राजनीति–सिद्धांत ''एक परिकल्पना के रूप में, अभीष्ट शब्दों में, अनासक्त और निष्पक्ष है। विज्ञान के रूप में, यह अव्यक्त अथवा सुस्पष्ट रूप से, उस बात पर निर्णय देने का प्रयास किए बग़ैर राजनीतिक सत्यता को अंकित करेगा जिसका वर्णन किया जा रहा है। तत्त्वज्ञान रूप में, यह आचरण के उन नियमों का वर्णन करेगा जो समाज में सभी के लिए उत्तम जीवन सुनिश्चित करेंगे...'' (*पॅलिटिकॅल थिअरीः फिलॉसॅफी, आइडिऑलॅजि, साइंस,* 1961)।

राजनीति–सिद्धांत अतिकल्पना नहीं है, यद्यपि इसमें राजनीतिक अभिदृष्टि का कोई तत्त्व हो सकता है। यह राजनीतिक क्रियाकलाप नहीं है, तो भी इसके अध्ययन व विश्लेषण हेतु वह राजनीतिक यथार्थताओं का ध्यान अवश्य रखता है। यह पूर्णरूपेण विज्ञानवाद नहीं है, हालाँकि यह विश्लेषणात्मक एवं क्रमबद्ध रूप से सभी राजनीतिक गतिविधियों की जड़ तक पहुँचने के प्रयास में रहता है। यह

विचारधारा नहीं है, फिर भी यह एक राजनीतिक व्यवस्था को सही ठहराने का प्रयास करता है और दूसरे की निन्दा करता है। एक बेहतर सामाजिक व्यवस्था लाने के एक स्पष्ट उद्देश्य के लिए यह परिकल्पनात्मक, वैज्ञानिक, तात्त्विक तथा एक ही समय में परिर्वतनशील है। इस प्रकार, इसमें परिवर्ती सोपानों में 'परिकल्पना', 'विज्ञान', 'तत्त्वज्ञान' तथा 'विचारधारा' के मूल सिद्धांत पाए जाते हैं।

1-2 jktuhfr&fl)kr D;k g\

राजनीति–सिद्धांत ''राजनीतिक'' क्या है विषयक एक परिकल्पना, राजनीतिक क्या है का विज्ञान और तत्त्वज्ञान है। जौर्ज सैबीन कहते हैं, ''यह राजनीति–विज्ञान विषयक अथवा राजनीति–विज्ञान संगत कुछ भी चीज है।'' यह चूँकि विस्तृत अर्थ है, वह इसका परिमित अर्थ भी देते हैं, यह कहते हुए कि यह ''राजनीतिक समस्याओं का अनुशासित अन्वेषण'' है (*ए हिस्ट्री ऑफ पॅलिटिकॅल थिअरी*, 1973)। डैविड हैल्ड राजनीति–सिद्धांत को इस रूप में परिभाषित करते हैं, ''राजनीतिक जीवन विषयक संकल्पनाओं व सामान्यीकरणों का एक तंत्र जिसमें सरकार, राज्य व समाज की प्रकृति, उद्देश्य व मुख्य अभिलक्षण विषयक तथा मनुष्यों की राजनीतिक क्षमताएँ विषयक विचार, कल्पनाएँ एवं उक्तियाँ होती हैं''(*पॅलिटिकॅल थिअरी टुडे*, 1991)। राजनीति–सिद्धांत की एक बड़ी ही विषद परिभाषा *पॅलिटिकॅल साइन्स डिक्शनरी* में दी गई है, जिसका वर्णन इस रूप में हैः ''वह विचार–संकलन जो राजनीतिक दृश्यघटना का मूल्यांकन करने, उसको स्पष्ट करने व उसका पूर्वानुमान करने का प्रयास करता है। राजनीति–विज्ञान के एक उप–क्षेत्र के रूप में, यह राजनीतिक विचारों, मूल्यों व संकल्पनाओं, तथा राजनीतिक व्यवहार के पूर्वानुमान–संबंधी स्पष्टीकरण से संबंध रखता है। इसके विस्तृत अर्थ में इसकी दो मुख्य शाखाएँ हैं : एक है अपने मूल्य, विश्लेषणात्मक, ऐतिहासिक व काल्पनिक महत्त्वों के साथ, राजनीतिक तत्त्वज्ञान अथवा प्रसामिक सिद्धांत। दूसरी शाखा है दुर्बोध प्रतिरूपों, व वैज्ञानिक रूप से परीक्षणीय प्रस्थापनाओं के निरूपण के माध्यम से ज्ञान को स्पष्ट करने, पूर्वानुमान करने, मार्गदर्शन करने, अन्वेषण करने व सुव्यवस्थित करने के अपने प्रयासों के साथ अनुभाविक सिद्धांत।''

सम्पूर्ण राजनीति–सिद्धांत राजनीति विषयक है। यह इस बात का एक पर्यवलोकन है कि राजनीतिक व्यवस्था किस विषय में है। यह ''राजनीतिक'' क्या है का एक प्रतीकात्मक प्रस्तुतीकरण है। अपनी *प्रकृति* में यह राजनीतिक क्रियाकलापों के प्रक्रमों व परिणामों का एक औपचारिक तार्किक व क्रमबद्ध विश्लेषण है। अपनी *प्रणाली* में यह विश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक तथा विवरणात्मक है। अपने *अभिप्राय* में यह उसे व्यवस्था, सम्बद्धता तथा अर्थ प्रदान करने का कार्य है जिसका संदर्भ ''राजनीतिक'' के रूप में लिया जा सकता है।

1-2-1 fl)kr D;k g\

राजनीति–सिद्धांत का अर्थ सिद्धांत का यह अर्थ आवश्यक बनाता है : यह जानने के लिए कि राजनीति–सिद्धांत वस्तुतः क्या है, पहले यह जानना चाहिए कि सिद्धांत क्या होता है? ग्रीक शब्द ''थिअरिया'' से जन्में थिअरी (सिद्धांत) का अर्थ है, अथवा कम से कम, अर्थ हो सकता है किसी बात पर शान्त एवं गंभीर चिन्तन अवस्था में उसे ग्रहण करने अथवा समझने के अभिप्राय से डाली गई एक पूर्ण–संकेन्द्रित मानसिक दृष्टि। ऑर्नोल्ड ब्रैक्ट (''*वॉट इज़ थिअरी*?'') शब्द ''थिअरी''(सिद्धांत) के विस्तृत व परिमित दोनों अर्थों का ज़िक्र करते हैं। विस्तृत भाव में वह कहते हैं, सिद्धांत का अर्थ है ''किसी विषय पर एक चिंतक की सम्पूर्ण शिक्षा'', जिसमें तथ्यों, उसके स्पष्टीकरण, इतिहास की उसकी अवधारणा, उसके मूल्य–निर्णयों, तथा लक्ष्यों, नीतियों व आधारभूत कारणों का वर्णन होता है।

परिमित भाव में, वह कहते हैं, सिद्धांत का अर्थ है केवल अथवा कम से कम मुख्यतः ''व्याख्यात्मक'' विचार। अपनी पुस्तक, *पॅलिटिकॅल थिअरी*, में ब्रैक़्ट ''... व्याख्या करना ही सिद्धांत का प्रकार्य है'' कहते हुए, सिद्धांत का प्रयोग परिमित भाव में करते हैं। इस प्रकार, उनके अनुसार, सिद्धांत का अर्थ है किसी बात को प्रत्यक्षतः अप्रेक्षित अथवा अन्यथा अनाभिव्यक्त आँकड़ों अथवा अन्तर्सम्बंधों के प्रसंग में स्पष्ट करने हेतु अभिकल्पित प्रस्थापना अथवा प्रस्थापनाओं का एक सेट। सिद्धांत को विज्ञान की प्रमात्रा के बिना वैज्ञानिक होना पड़ता है, यह बात अकल्पनीय है। परन्तु सिद्धांत परिकल्पना या कहिए तत्त्वज्ञान, के बग़ैर उतना ही निरर्थक है जितना कि विज्ञान के बग़ैर। सिद्धांत विज्ञान व तत्त्वज्ञान दोनों के विशिष्ट तत्त्वों का एक सम्मिश्रण है। सिद्धांत व्यवहार नहीं है, क्योंकि करने में भी सोचने की आवश्यकता होती है। सिद्धांत में ऐसा परिकल्पनात्मक ढाँचा निहित होता है, जिसका व्यवहार में वस्तुतः अभाव होता है। सिद्धांत मात्र 'व्याख्या' नहीं है, क्योंकि ''व्याख्या करना'' ''सोचने'' का एक हिस्सा मात्र है, इसके दूसरे भाग में, उदाहरणार्थ, किसी दृश्यघटना को ''खोजना'', ''तय करना'', ''बढ़ाना'', ''स्पष्ट करना'', ''और गठित करना'' निहित है। सिद्धांत प्राक्कल्पना नहीं है, क्योंकि प्राक्कथन तथ्यों की एक अस्थाई कल्पना को इंगित करता है, और इसी कारण, उस बात से रहित होता है जो सिद्धांत में सचमुच होती है, ''निश्चतता''। सिद्धांत तत्त्वज्ञान नहीं है, क्योंकि जबकि सिद्धांत ''कुछ'' के विषय में होता है, तत्त्वज्ञान ''सब कुछ'' के विषय में होता है। सिद्धांत विचार नहीं है क्योंकि यह विचार के विषय में चिंतन है, और न कि स्वयं में एक सम्पूर्ण विचार। वास्तव में, सिद्धांत व कारण के बीच काफ़ी कुछ उभयनिष्ट है, क्योंकि वैज्ञानिक होने का दावा दोनों ही करते हैं, फिर भी सिद्धांत कारण के परे, विज्ञान के परे देखता है।

सिद्धांत, हम यह बात कार्ल ड्यूश (*द नर्व्ज़ ऑफ गवर्नमेण्ट*, 1963) के साथ जोड़ सकते हैं, असम्बद्ध आँकड़ों को स्पष्ट करने, व्यवस्थित करने व उसका वर्णन करने का प्रयास करता है, पहचान करता है कि क्या युक्ति–संगत है, और इसी कारण किसी भी दृश्यघटना में जो बात लुप्त होती है उसे सूचित करता है; प्रेक्षणीय तथ्यों के आधार पर पूर्वानुमान करता है। सिद्धांत व्यवहार हेतु एक मार्गदर्शक है, जो बात वर्णन मात्र होती है उसमें इज़ाफ़ा करता है, प्राक्कथन को स्पष्ट करता है, और तत्त्वज्ञान के एक भाग के रूप में उस विचारार्थ विषय को स्पष्ट करता है जो कि कारण व अभिदृष्टि दोनों की आवश्यकताओं से मेल खाता है।

1-2-2 jktuhfr&fl)kr % fufgrkFk

सिद्धांत में विज्ञान के साथ–साथ तत्त्वज्ञान भी निहित होता है। इसका मतलब है कि इस पृष्ठभूमि के खिलाफ कहा जा सकता है कि एक सिद्धांती वैज्ञानिक व दार्शनिक दोनों होता है; एक सिद्धांती वैज्ञानिक के मुकाबले कहीं अधिक होता है; वह एक दार्शनिक से भी अधिक होता है। राजनीति में प्रयुक्त किये जाने पर सिद्धांत को समझने का अर्थ होगा राजनीति को एक सिद्धांत के रूप में, एक विज्ञान के रूप में और तत्त्वज्ञान के रूप में भी समझना। ब्ल्यूहैम, इस प्रकार, राजनीति–सिद्धांत को ऐसे स्पष्ट करते हैं ''राजनीतिक आखिरकार जो है उसकी एक व्याख्या, राजनीति जगत् का एक सामान्य बोध, एक आचार–विचारादि–संबंधी मानक। इसके बग़ैर हम किसी घटना को राजनीतिक रूप में पहचानने, वह क्यों हुई के विषय में कुछ भी तय कर पाने, वह अच्छी थी या बुरी का निर्णय कर पाने, अथवा यह निर्धारित कर पाने कि आगे क्या हो सकता था, में असमर्थ रहते। एक सिद्धांत हमें यह तादात्म्य स्थापित करने में मदद करता है कि राजनीति की किसी घटना–विशेष में क्या हो रहा है... वह हमें कोई घटना क्यों घटी यह बात स्पष्ट करने में और भावी घटनाओं का पूर्वानुमान करने में मदद करता है... सिद्धांत क्या हो रहा है का मूल्यांकन करने और हमारे राजनीतिक विकल्पों का

मार्गदर्शन करने हेतु एक साधन भी है...''। राजनीति–सिद्धांती का काम सचमुच महत्त्वपूर्ण है। ब्रैक्ट यह कहते हुए इस पर ग़ौर करते हैं कि ''यह प्रकार्य राजनीति–सिद्धांती का है कि समाज के राजनीतिक जीवन की तत्काल व संभावित समस्याओं को दूसरों से पहले देखे; दूसरों की अपेक्षा अधिक गंभीरता से विश्लेषित करे; उन वैज्ञानिक कार्य–प्रक्रियाओं के साथ, जिनसे होने वाले प्रत्याशायोग्य परिणामों पर पूरी तरह से सोचा जा चुका है, यथापूर्व अग्रिम रूप से व्यावहारिक राजनीतिज्ञों की कमी पूरी करे; तथा उसे न सिर्फ़ प्रतिभाशाली विचार ही वरन् ज्ञान का वह ठोस आधार भी प्रदान करे जिस पर निर्माण करना है।'' जब राजनीति–सिद्धांत अपने कार्य को भली भाँति निष्पादित करता है, वह आगे कहते हैं, ''मानवता के विकास हेतु वह हमारे संघर्ष में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शस्त्रों में से एक होता है।''

सिद्धांत क्या होता है अथवा राजनीति–सिद्धांत क्या है पर चर्चा हमें राजनीति–सिद्धांत के लाक्षणिक निहितार्थों अथवा मुख्य पहलुओं को पहचानने में मदद करेगी। इनमें से कुछ हैं:

i) वह क्षेत्र जिसमें राजनीति–सिद्धांत काम करता है, केवल राजनीति के क्षेत्रों नागरिक का राजनीतिक जीवन, उसका राजनीतिक व्यवहार, उसके राजनीतिक विचार, वह सरकार जो वह स्थापित करने के प्रयास में है, और इस प्रकार की किसी सरकार से प्रत्याशित कार्य, तक फैला है।

ii) वे पद्धतियाँ, जो राजनीति–सिद्धांत अपनाता है, में शामिल हैं राजनीतिक दृश्यघटना का वर्णन, व्याख्या और अन्वेषण।

iii) यद्यपि राजनीति–सिद्धांत पूर्णतया इस बारे में है कि 'राजनीतिक' क्या है, फिर भी यह 'राजनीतिक' को 'सामाजिक', 'आर्थिक', 'मनोवैज्ञानिक', 'पारिस्थितिक', 'नैतिक' इत्यादि के संबंध में समझने का प्रयास करता है।

iv) वह लक्ष्य जो राजनीति–सिद्धांत प्राप्त करने की चेष्टा करता है, वह है एक अच्छे समाज में एक अच्छे राज्य का निर्माण, और इस प्रक्रिया में, ऐतिहासिक रूप से कसौटी पर कसे व युक्तियुक्त रूप से हासिल प्रक्रियाएँ, कार्यविधियाँ, संस्थाएँ व प्राधार जन्म लेते हैं।

v) एक विचार वस्तु के रूप में, राजनीति–सिद्धांत राजनीतिक घटनादृश्य की व्याख्या करने, मूल्यांकन करने व पूर्वानुमान करने का प्रयास करता है, और इस प्रक्रिया में न सिर्फ वैज्ञानिक रूप से जाँच–योग्य मानदण्डों की रचना का निर्माण करता है, बल्कि मानव व्यवहार के नियमों के रूप में मूल्यों का भी सुझाव देता है।

vi) राजनीति–सिद्धांत व्यवस्थाकारी और व्याख्यात्मक दोनों है।

1-2-3 jktuhfr&fl)kr % vUroLrq

राजनीति, एक राजनीतिक कार्यकलाप के रूप में, सामान्यतः स्वयं–चेष्टारत व्यवहार, मिथ्याचार, व प्रवृत्तियों के व्यवहारकौशल को प्रदर्शित करते वैराग्यप्रधान दार्शनिक सिद्धांत, तथा संशयवाद से जुड़ी होती है। इस नकारात्मक सम्पृक्तार्थ का शायद ही कोई आधार हो। राजनीति–सिद्धांत न तो राजनीतिक कारिस्तानी का कोई सिद्धांत है, न ही राजनीतिक कुचक्रों की कोई परिकल्पना। यह तो उस चीज का एक अनुशासनबद्ध अन्वेषण है जो 'राजनीतिक' को संघटित करता है। इसकी विषय–वस्तु समय–समय पर बदलती रही है। पाश्चात्य राजनीतिक परम्परा में, प्राचीन यूनानियों से

लेकर अठारहवीं शती के अंत तक, राजनीति–सिद्धांत ने स्वयं को अधिकतर राजनीति को 'क्या होना चाहिए' से संबद्ध रखा। लगभग पूरी उन्नीसवीं शती के पूर्वार्ध में, राजनीति–सिद्धांत में, मुख्यतः एक निर्णयन् निकाय के रूप में सरकार की प्रकृति व संचयन का ही क्रिया–व्यापार आता था। तदोपरांत एक ऐसा काल आया जब विज्ञानवाद के प्रभावाधीन, कुछ अमरीकी राजनीति–वैज्ञानिकों ने राजनीति–सिद्धांत के हस्तांतरण को उनके अधिकांशतः ब्रिटिश, परम्परावादी लोगों, के विरुद्ध घोषित कर दिया जो राजनीति–सिद्धांत के मूल्य की एक राजनीतिक कार्रवाई के मार्गदर्शक के रूप में वकालत करते थे। संसार के तेजी से बदलते स्वरूप के साथ, राजनीति–सिद्धांत ने 'विचारधारा की समाप्ती' व 'इतिहास का अंत' निहित बहसों के भीषण आक्रमणों में सुखपूर्वक अपनी उत्तरजीविता बनाये रखी है। राजनीति–सिद्धांत का कार्य–व्यापार, वर्तमान में, सरकार की प्रकृति व उचित प्रयोजन दोनों हो गया है।

राजनीति–सिद्धांत, राजनीतिक दृश्यघटना के एक अनुशासनबद्ध अन्वेषण के रूप में, सरकार की संस्थाओं, तथा उस पूरी राजनीतिक प्रणाली के *क्यों* व *क्या* से निकट से जुड़ी हैं, जिसमें सरकार कार्यरूप में व्यवहृत है। राजनीति–सिद्धांत का अध्ययन करना उस प्रसंग का अध्ययन करना है, जिसमें वह विद्यमान होता है। राजनीति–सिद्धांत को राजनीतिक व्यवस्था के दायरे में, राजनीतिक व्यवस्था को सामाजिक व्यवस्था के दायरे में, सामाजिक व्यवस्था को उस अवधि जिसमें वह विद्यमान है, और उस परिवेश जिसमें वह पलता है, में समझे जाने की आवश्यकता है।

राजनीति–सिद्धांत की विषयवस्तु में इस बात की समझ शामिल है कि सचमुच 'राजनीतिक' क्या है, जो ग़ैर–राजनीतिक है उसके साथ राजनीतिक को जोड़ना, तथा उसकी अपनी प्रकृति जानने के लिए बहुत से सामाजिक विज्ञानों के परिणामों को एकीकृत करना व समन्वित करना। इसका कार्यक्षेत्र जो इसके तहत आता है, वहीं तक ही सीमित नहीं है, बल्कि वहाँ तक है जो उसकी परिधि व उसके परे भी विद्यमान है।

यह तजवीज करते हुए कि जो राजनीतिक है उसे परिभाषित करने का कार्य एक सतत कार्य है, शैल्डन वॉलिन (*पॉलिटिक्स एण्ड विज़न,* 1960) राजनीति–सिद्धांत की विषयवस्तु में निम्नलिखित को शामिल करते हैं :

i) समूहों, व्यक्तियों, अथवा समाजों के बीच प्रतिस्पर्धात्मक लाभ हेतु तलाश के इर्द–गिर्द केन्द्रीभूत होती एक प्रकार की गतिविधि;

ii) एक प्रकार का कार्यकलाप जो इस तथ्य के अनुरूप है कि यह परिवर्तन व आपेक्षिक अभाव की स्थिति में होता है;

iii) एक प्रकार का कार्यकलाप जिसमें लाभकारी के लक्ष्य ऐसे महत्त्व के परिणाम पैदा करते हैं कि पूरे समाज अथवा उनके एक खास हिस्से को वे एक महत्त्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करते हैं।

1-3 jktuhfr&fl)kr dh iÑfr

स्पष्ट रूप से यह जानना कि राजनीति–सिद्धांत वस्तुतः क्या है, इसके स्वभाव को जानना है। राजनीति–सिद्धांत राजनीतिक विचार कहा जाता है, और यही कारण है कि कुछ ऐसे लोग भी हैं जो राजनीति–सिद्धांत का वर्णन अनेक विचारकों की कल्पना–कृतियों को द्योतित करने के रूप में करते हैं। परन्तु यह वो नहीं है जो राजनीतिक विचार होता है। अन्य ऐसे लोग भी हैं जो राजनीति–सिद्धांत

को राजनीति–दर्शन के बराबर मानते हैं। यह सत्य है कि राजनीति–सिद्धांत राजनीति–दर्शन के एक भाग का निर्माण करता है, परन्तु यह मात्र एक भाग ही है; एक भाग कभी भी जितना है, सब नहीं हो सकता, और एक भाग के रूप में यह एक भाग ही रहता है, यथा संपूर्ण का एक भाग। फिर भी अन्य ऐसे लोग भी हैं जो राजनीति में विज्ञान को सम्मिलित करने के बाद, उसे राजनीति–विज्ञान कहलाना पसन्द करते हैं। परन्तु वे लोग जो इसे एक राजनीति का विज्ञान माने जाने का हठ करते हैं, यह स्वीकार करने से इंकार करते हैं कि कभी राजनीति का कोई इतिहास, अथवा राजनीति की कोई संस्कृति रही थी। ब्रैक़्ट इसीलिए कहते हैं, ''... राजनीति–दर्शन, राजनीति–सिद्धांत, और राजनीतिक–विज्ञान अब अन्तर्परिवर्तनीय शब्द नहीं रहे हैं..., विज्ञान पर जोर दिये जाने और राजनीति–दर्शन से भेद किए जाने के साथ राजनीति–विज्ञान अब राजनीति–दर्शन से सहज ग्राह्य अंतर में वैज्ञानिक विधियों के प्रयोग द्वारा संकुचित प्रयासों की ओर संकेत करता है, जो कि इन सीमाओं को लांघने को स्वतंत्र है। इसी प्रकार राजनीतिक 'सिद्धांत' को अब जब राजनीतिक 'दर्शन' के सामने रखा जाता है तो सामान्यतः इसका अर्थ सिर्फ़ राजनीति–दर्शन से भिन्नता में *वैज्ञानिक* सिद्धांत की ओर संकेत करना होता है। कोई भी प्रत्याशित शोध–प्रबंध जो कि राजनीति–दर्शन द्वारा प्रस्तावित है, केवल एक ''कारगर प्राक्कल्पना'', वैज्ञानिक यंत्र–मंजुषा में एक सहायक के रूप में, और न कि... या अभी न कि. वैज्ञानिक ज्ञान के एक अंश के रूप में (वैज्ञानिक) राजनीति–सिद्धांत का हिस्सा हो सकता है''।

राजनीति–सिद्धांत तमाम इतिहास नहीं है, बल्कि यह संकुचित अर्थ में इतिहास है; यह तमाम दर्शन नहीं है, बल्कि यह कुछ अंश में दर्शन है; यह तमाम विज्ञान नहीं है, बल्कि वहीं तक विज्ञान है जहाँ तक यह कारण का जवाब देता है। एक राजनीति–सिद्धांत को एक भाग इतिहासकार, एक भाग दार्शनिक, और एक भाग वैज्ञानिक होना पड़ता है।

1-3-1 jktuhfr&fl)kr bfrgkl d :i e

इस बात की कि राजनीति–सिद्धांत इतिहास है, जौर्ज सैबाइन जैसे विद्वानों द्वारा ज़ोरदार वकालत की गई है, परन्तु समग्र इतिहास राजनीति–सिद्धांत नहीं है, ठीक उसी प्रकार जैसे समग्र राजनीति–सिद्धांत इतिहास नहीं है। राजनीति–सिद्धांत के बिना इतिहास एक बेबुनियाद इमारत है। राजनीति का अध्ययन और विश्लेषण करते समय हम जो समझना सीखते हैं, वही है राजनीतिक परंपरा, और व्यवहार का एक असली तरीका। यह, इसी कारण, उचित होगा कि राजनीति का अध्ययन आवश्यक रूप से एक ऐतिहासिक अध्ययन हो। इतिहास, हमें पता होना चाहिए, मृत व दफ़न की कथा से कहीं अधिक है; यह अनुभव व ज्ञान का; क्या पाया गया व क्या खोया गया, की सफलताओं व विफलताओं का एक भण्डारगृह है। यही सार–योग है तथा एक ही साथ एक नए विकास का गठन–प्रमुख, कुछ ऐसा जैसा कि प्रोफ़ेसर एल.एस. राठौर कहते हैं, ''शाश्वत रूप से महत्त्वपूर्ण व निदेशात्मक, मनुष्य की अनन्त प्रगति में समकालीनता से अपृथक्य रूप से जुड़ा'' है। ''इतिहास पर ध्यान मत दो'', वह चेताते हैं, ''और राजनीति–सिद्धांत का आनंद फिर कभी दोबारा नहीं मिलेगा।''

इतिहास के रूप में राजनीति–सिद्धांत उसे चुनौती देता है, जो अपनी उपयोगिता खो चुका है। अब कोई अफ़सोस नहीं करता कि राज्य एक दैविक सृष्टि अथवा प्रकृति के राज्य में एक ठेके का परिणाम रहा है। इतिहास के रूप में, राजनीति–सिद्धांत उसे बचाए रखता है जो महत्त्व का है और आने वाले लम्बे समय तक इसका पोषण करने हेतु भावी पीढ़ी की मदद करता है। न्याय, स्वतंत्रता, समानता, कर्तव्यों जैसी संकल्पनाएँ, जो कि समय के वर्षक्रम से लिखे हुए इतिहासों से जन्मी, आज राजनीति–सिद्धांत द्वारा ऊँचे स्थान पर रखी जा रहीं है और भविष्य में ऐसे ही रखी जाती रहेंगी। वास्तव में, इतिहास

की कभी पुनरावृत्ति नहीं होती, परन्तु इसकी शायद ही उपेक्षा की जा सकती है। इतिहास से स्वयं संबंध विच्छेद कर लेने के प्रयास में, राजनीति–सिद्धांत अपना निजी महत्त्व खो देता है, क्योंकि मूल के अभाव में कोई फल पैदा नहीं हो सकता जैसे कि सीली ने काफ़ी पहले कहा था। इतिहास के माध्यम से ही यह राजनीति–सिद्धांत क्या चीज है की व्याख्या करता है। किसी भी मूल–पाठ को बिना उसके प्रसंग के नहीं समझा जा सकता है। प्लेटो का साम्यवाद उससे अर्थयुक्त रूप से भिन्न है जिसे मार्क्स का साम्यवाद होने का दावा किया जाता है, और प्रत्येक के साम्यवाद को उनके काल विशेष के इतिहास को समझकर ही समझा जा सकता है। यह उसका युग ही होता है जो किसी के राजनीति–सिद्धांत को उद्यत करता है और आगे बढ़ता है : इतिहास राजनीतिक सिद्धांत का विकास–पुनर्विकास करता है। तब कैसे राजनीतिक–सिद्धांत अपने एक पहलू की अनदेखी कर सकता है, यथा ऐतिहासिक पहलू? सैबाइन लिखते हैं कि महान् राजनीति–सिद्धांत ''एक वर्तमान परिस्थिति के विश्लेषण में और अन्य परिस्थितियों हेतु सुझावात्मक'' दोनों मे बढ़कर होता है। जिस प्रकार, ''एक अच्छा राजनीति–सिद्धांत,'' प्रोफ़ेसर एस.पी. वर्मा (*मॉडर्न पॅलिटिकॅल थिअरी*, 1987) लिखते हैं, ''यद्यपि यही ऐतिहासिक परिस्थितियों के एक विशिष्ट समूह का परिणाम था, आगामी सभी कालों के लिए एक महत्त्व रखता है। यथार्थतः राजनीति–सिद्धांत की यह सार्वभौमिक विशेषता ही है जो इसे आदरयोग्य बनाता है'' (देखें जोर्ज एच. सैबाइन,''वॅाट इज़ पॅलिटिकॅल थिअरी?'' *जर्नल ऑफ पॉलिटिक्स*, खण्ड–1, नं. 1, फरवरी 1939)।

राजनीति–सिद्धांत इस अर्थ में इतिहास है कि यह काल, स्थान और उन परिस्थितियों को समझने की चेष्टा करता है जिनमें वह जन्म लेता है। यदि वह अपने ऐतिहासिक प्रसंग पर ध्यान नहीं देता है, वह अपनी शक्ति, अपना केन्द्र व अपना संदेश खो देता है। किसी भी राजनीति–सिद्धांत को कुछ तथ्य सामने रखने होते हैं, जैसे तर्काधार (तथ्यात्मक–ऐतिहासिक कारक, जैसा कि सैबाइन कहते हैं), परिस्थितियाँ जिनमें यह पनपता है (अस्थायी कारक, जैसा कि सैबाइन इसका वर्णन करते हैं), और संदेश, यथा, राजनीतिक परिकल्पना (मूल्यनकारी कारक, जैसा कि सैबाइन आग्रहपूर्वक कहते हैं)। राजनीति–सिद्धांत नितान्ततः अथवा केवल इतिहास (उन तथ्यों का एक वृत्तान्त जिन पर वह काम करता है और अतीत यानी इतिहास, में काम कर चुका है) नहीं है, यह एक विज्ञान है जहाँ तक की इसे पृथक्करण में न समझा जाए, और एक दर्शन भी है जहाँ तक की यह प्रेरणा प्रदान करता है।

1-3-2 jktuhfr&fl)kr n'kZu dk :i esa

यह कि राजनीति–सिद्धांत को दर्शन के रूप में, लिओ स्ट्रौस जैसे विद्वानों द्वारा बहुत अच्छी तरह स्पष्ट एवं सुदृढ़ता से अभिव्यक्त किया गया है (''वॅाट इज़ पॅलिटिकॅल फिलोसॅफी?'' *जर्नल ऑफ पॉलिटिक्स*, XIX, अगस्त 1967), परन्तु समग्र दर्शन राजनीतिक दर्शन नहीं है जिस प्रकार समग्र राजनीति–सिद्धांत दर्शन नहीं है। एक गूढ़ अध्ययन के रूप में सामान्यतः सम्पूर्ण ब्रह्मांड को, और विशेषतः आदर्शों, मानकों व मूल्यों को अपने में समाहित करते हुए, दर्शन ही पूरे संसार पर नियंत्रण करने वाले सामान्य नियमों का सार–योग है। इसने अपने मूल्यांकनात्मक कारक के रूप में युगों तक राजनीति–सिद्धांत को भली प्रकार संतुष्ट किया है, जैसा कि सैबाइन ने कहा है। दर्शन ने, जैसा कि कैण्ट कहते हैं, तीन प्रश्नों का उत्तर दिया है : '' मैं क्या जान सकता हूँ?'' ''मुझे क्या करना पड़ेगा?'' व ''मैं किसकी आशा कर सकता हूँ?'' और यही है जो दर्शन को जीवन का ध्रुवतारा बना देता है। बिना दर्शन के कोई भी राजनीति–सिद्धांत कभी अस्तित्व में नहीं रह सकता; भविष्य पर नज़र रखे बग़ैर कोई भी वर्तमान कभी कायम नहीं रह सकता, क्योंकि कोई भी वर्तमान अपने अतीत के बग़ैर नहीं डटा रह सकता।

राजनीति–सिद्धांत एक दर्शन है, क्योंकि यह न सिर्फ़ विषयों की प्रकृति को जानने की चेष्टा करता है, बल्कि यह भी स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि विषय वस्तुतः क्यों अस्तित्व रखते हैं। किसी कर्म अथवा विचार को केवल उसका मूल्यांकन करके ही समझा जाता है। मूल्यांकन बोध का एक हिस्सा है। सिद्धांत से भिन्न रूप में दर्शन एक 'बुद्धि हेतु खोज' है, अथवा जैसा कि स्ट्रौस दृष्टिकोण रखते हैं, ''सार्वत्रिक ज्ञान हेतु, समष्टि के ज्ञान हेतु खोज''। राजनीति–सिद्धांत दर्शन के रूप में ''राजनीतिक विषयों को तथा सटीक, अथवा अच्छी राजनीतिक व्यवस्था की प्रकृति को यथार्थतः जानने का प्रयास'' है (स्ट्रौस)। राजनीति वो नहीं है, जिसका अभिग्रहण अथवा मताग्रह किया जाता है। दरअसल, एक राजनीति–सिद्धांती से उम्मीद की जाती है कि एक से अधिक अभिधारणाएँ अथवा मत रखे; उसको जानकारी रखनी पड़ती है। दर्शन तब प्रकट होता है जब मत अभिधारणा ज्ञान की ऊँचाइयाँ छू लेती है, और यही है जो यथार्थतः राजनीति–सिद्धांत का काम है। राजनीति–सिद्धांत दर्शन के रूप में ''राजनीतिक विषयों की प्रकृति के ज्ञान द्वारा राजनीतिक विषयों की प्रकृति के विषय में मतों/अवधारणाओं का स्थान ले लेने का एक प्रयास'' है (स्ट्रौस)।

मूल्य, स्ट्रौस मानते हैं, राजनीति–सिद्धांत के एक अनिवार्य अवयव हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे वे दर्शन के अनिवार्य अवयव हैं। प्रत्येक राजनीति दर्शनशास्त्री को अपने हक में एक अध्यापक बनना पड़ता है: उसे प्राध्यापन करना पड़ता है; उसे अध्यापन करना पड़ता है; उसे प्रतिपादन करता पड़ता है। प्रोफ़ेसर वर्मा, इसीलिए लिखते हैं कि प्रतिपादन का लक्ष्य राजनीति–सिद्धांती के सामने हमेशा रहता है। ''कुछ आधुनिक लेखकों ने जिसका 'राजनीति–दर्शन की जनवार्ता', अथवा मात्र 'विचारधारा' के रूप में वर्णन किया है, राजनीति–सिद्धांत की समझ हेतु अत्यावश्यक है।'' राजनीति–सिद्धांत न सिर्फ़ व्याख्या करता है, बल्कि अनुकूलतः अथवा प्रतिकूलतः प्रभावित भी करता है। एक राजनीतिक गतिविधि के मूल्यांकनात्मक परिप्रेक्ष्य उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं, जितने कि उसके तथ्यात्मक परिप्रेक्ष्य। ये, इस अर्थ में, *मूल्य* व *तथ्य* ही हर किसी राजनीति–सिद्धांत का एक अभिन्न भाग बनते हैं।

1-3-3 jktuhfr&fl)kr foKku d: i e

राजनीति–सिद्धांत एक विज्ञान है, इस बात पर ऑर्थर बैंटली (द *प्रोसैस ऑफ गवर्नमैण्ट*, 1908) से लेकर जौर्ज कैटलिन (द *साइंस एण्ड मैथॅड ऑफ पॉलिटिक्स*, 1927); डैविड ईस्टन (द *पॅलिटिकॅल सिस्टम*, 1953) व रॉबर्ट डाल (*मॉडर्न पॅलिटिकॅल एनालिसिस*, 1963) तक विद्वानों द्वारा प्रभावशाली ढंग से ज़ोर दिया गया है; परन्तु समग्र विज्ञान राजनीति–सिद्धांत नहीं है, ठीक उसी प्रकार जैसे समस्त राजनीति–सिद्धांत विज्ञान नहीं है। राजनीति–सिद्धांत इस अर्थ में एक विज्ञान नहीं है, जैसे कि रसायनशास्त्र या भौतिकशास्त्र या गणितशास्त्र एक विज्ञान हैं। यह बिल्कुल इस रूप में कोई विज्ञान नहीं है, जैसे कि ये प्राकृतिक अथवा भौतिक विज्ञान हैं, क्योंकि राजनीति–सिद्धांत में उस भाँति कोई सार्वत्रिक रूप से मान्य सिद्धांत नहीं होते, न स्पष्ट कारण–प्रभाव संबंध होते हैं, न प्रयोगशालाएँ होती हैं और न ही पूर्वानुमान लगाए जाते हैं, जिस प्रकार ये प्राकृतिक व यथार्थ विज्ञानों में पाए जाते हैं। यह एक विज्ञान है, जहाँ तक कि यह उन संकल्पनाओं व मानदण्डों को स्वीकार करता है जो प्रेक्षणीय व परीक्षणीय दोनों हैं, और जहाँ तक कि यह विवेक व बुद्धिवाद की आवश्यकताओं को पूरा करता है। सामान्यतः अमेरिकन समाज–विज्ञान अन्वेषकों ने, और विशेष रूप से व्यवहारवादियों ने, राजनीति का एक विज्ञान बनाने का प्रयास किया और इस प्रक्रिया में, उस ओर जुटे जिसे 'अवव्याख्यावाद' (Reductionism) कहा जा सकता है। राजनीति–सिद्धांत एक विज्ञान है जहाँ तक कि वह हो सकता है, व वास्तव में किसी सामाजिक जनसमूह पर प्रयोग किया जाता है तथा यथार्थ विज्ञानों के निर्णायक

नियम सीमाओं के भीतर उसी प्रकार प्रयोज्य हैं, जैसे कि किसी सामाजिक विज्ञान में। विज्ञान के रूप में राजनीति–सिद्धांत मात्र एक सामाजिक विज्ञान है। अपनी कार्यप्रणाली, अपने उपगम्य तथा अपने विश्लेषण में यह एक विज्ञान है। उस सीमा तक, यह एक विज्ञान है, एक आदि विज्ञान जैसा कि इसकी अरस्तु ने व्याख्या की थी। यह एक विज्ञान है जहाँ तक कि उसके निष्कर्ष 'अध्ययन', 'प्रेक्षणों', 'प्रयोगों' आदि उन अभिलक्षणों के अनुसार निकाले जाते हैं, जो विज्ञान की किसी भी सामान्य परिभाषा के साथ चलते हैं। राजनीति को एक विज्ञान बनाने के लिए, तथा राजनीति को यथार्थ विज्ञान बनाने के लिए 'तकनीकें' व 'साधन' ढूँढने के लिए अधिक दूर जाने की आवश्यकता नहीं है; कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि इस प्रक्रिया में कोई राजनीति–सिद्धांत शेष रहता है अथवा नहीं। राजनीति–सिद्धांत में विज्ञान की भूमिका उस बिंदु तक ही सीमित रहनी चाहिए जहाँ तक यह किसी राजनीतिक दृश्यघटना को समझने में मदद करे, और उस बिंदु तक, विज्ञान को राजनीति–सिद्धांत के क्षेत्र में प्रवेश मिलना चाहिए। राजनीति–सिद्धांत आत्मपरकता के साहचर्य में वस्तुपरकता, मूल्यों के संबंध में तथ्यों, सिद्धांत के साथ ही अनुसंधान को स्वीकार करता है। विज्ञान के रूप में राजनीति–सिद्धांत निष्पक्ष, अनुत्कट और वस्तुपरक ज्ञान को जन्म देता है (देखें, कोलिन हे, *पॅलिटिकॅल एनालिसिस,* 2002)।

सामाजिक विज्ञानों की अपनी सीमाएँ होती हैं। दूसरी ओर, खेल के नियम (यथार्थ विज्ञानों के) समय साथ नहीं बदलते हैं। भौतिकी के नियम, उदाहरण के लिए, सभी कालों भूत, वर्तमान व भविष्य में सभी परिस्थितियों के संबंध में माने जा सकते हैं। परन्तु यह सामाजिक विज्ञानों के संबंध में सत्य नहीं है। '' 'आर्थिक' व 'राजनीतिक' की प्रकृति,'' कोलिन हे कहते हैं, ''कीन्स व मार्क्स के अनुसार इस भाँति भिन्न है कि 'भौतिक' व 'प्राकृतिक' न्यूटन व आइन्सटाइन के अनुसार नहीं है।'' हमें याद रखना होगा कि (i) ''सामाजिक प्राधार, प्राकृतिक प्राधारों से भिन्न, उन गतिविधियों पर निर्भरता से परे अस्तित्व नहीं रखते हैं जिन पर वे नियंत्रण रखते हैं,'' (ii) ''सामाजिक प्राधार, प्राकृतिक प्राधारों से भिन्न, अभिकर्त्ताओं के उन कामों की भावना से परे अस्तित्व नहीं रखते हैं जो कि वे अपने कार्यकलाप में कर रहे हैं।'' (iii) सामाजिक प्राधार, प्राकृतिक प्राधारों से भिन्न, केवल अपेक्षाकृत रूप से स्थायी प्राकृतिक प्राधारों से भिन्न, केवल अपेक्षाकृत रूप से स्थायी हो सकते हैं।'' (देखें आर. भास्कर, *द लिमिट्स ऑफ नैचुरलिज़्म,* 1979)। यहीं सामाजिक विज्ञान प्राकृतिक विज्ञानों से भिन्न हैं। राजनीति–सिद्धांत की सीमाएँ राजनीतिक विश्लेषण के नीतिशास्त्र के भीतर तय होती हैं।

1-4 jktuhfr&fl)kr% fodkl o mRifÙk

राजनीति सिद्धांत, पश्चिम में, विभिन्न चरणों से गुज़र चुका है। एक समय था जब, प्राचीन यूनान व मध्यकाल के दौरान, राजनीति–सिद्धांत राज्य के नैतिक लक्ष्यों को पहचाने की चिन्ता खुद करता था, यथा उन उद्देश्यों को जो कि राज्य प्राप्त करने हेतु दिलो–दिमाग़ में रखता था। प्लेटो व अरस्तु दोनों ही न्यायशीलता स्थापित करने अथवा व्यक्ति को उत्तम जीवन प्रदान करने हेतु राज्य के प्रकार्यों पर ज़ोर देते थे। मध्यकालीन राजनीति–सिद्धांत सम्मिलित हुआ, क्योंकि वह धर्म के साथ था, ईश्वर के पास स्थान पाने हेतु व्यक्ति को तैयार करने व प्रशिक्षित करने के लिए राज्य से माँग करता था। आरम्भिक आधुनिक युगीन राजनीति–सिद्धांत ने राज्य उत्पत्ति–संबंधी परिकल्पनाओं पर विचार–विमर्श का प्रयास किया, इसका अनुसरण उन दार्शनिकों द्वारा किया गया जिनके लिए राज्य का संगठन व प्रकार्य ही राज्य के मुख्य गंभीर चिंतनीय विषय थे। बीसवीं शती–मध्य का राजनीति–सिद्धांत आमतौर पर सत्ता की संकल्पना को राज्य का मूल विषय बनाते हुए, राज्य की संस्थाओं से वास्ता रखता था।

राजनीति–सिद्धांत के विकास व मूल्यांकन को विस्तारपूर्वक तीन मुख्य धाराओं में प्रतिपादित किया जा सकता है। ये हैं : व्यापक राजनीति–सिद्धांत, आधुनिक राजनीति–सिद्धांत, और समकालीन राजनीति–सिद्धांत। व्यापक, आधुनिक व समकालीन में राजनीति–सिद्धांत का वर्गीकरण, वास्तव में, प्रासंगिक है। व्यापक अथवा पारम्परिक को जो आधुनिक से अलग करता है परवर्ती में *विज्ञान* का तत्त्व और पूर्ववर्ती में इसका अभाव ही है। राजनीति–सिद्धांत की व्यापक परंपरा में दर्शनशास्त्र प्रमुख है, जबकि आधुनिकतावादी पर विज्ञान व उसकी कार्यप्रणाली हावी रहते हैं। एक अपवाद रूप में, पश्चिम की प्राचीन व मध्यकालीन अवधियों में कोई अरस्तु अथवा थॉमस हो सकता है, जिसने कि जनजीवन के नियमों को खोजते–खोजते विज्ञान तत्त्व पर ज़ोर दिया होगा, और हमारे ज़माने में एक स्ट्रौस हो सकता है जिसने राजनीति के अध्ययन में दर्शन की उपयोगिता को देखा होगा। इसी प्रकार, आधुनिक राजनीति–सिद्धांत एवं समकालीन राजनीति–सिद्धांत कुछ–कुछ भिन्न हैं, कम से कम अपने सत्त्व में। आधुनिक राजनीति–सिद्धांत आनुभविक और वैज्ञानिक है, जबकि समकालीन राजनीति–सिद्धांत मीमांसात्मक एवं ऐतिहासिक है। समकालीन राजनीति–सिद्धांत व्यापक व आधुनिक राजनीति–सिद्धांत दोनों के सत्त्व को संश्लेषित करने का प्रयास करता है।

1-4-1 0;kid (Classical) jktuhfr&fl)kar

व्यापक राजनीति–सिद्धांत प्राचीन यूनानी सभ्यता में, सुकरात, प्लेटो व अरस्तु के लेखों में उभरा, और उन्नीसवीं शती के आरम्भ तक जारी रहा। राजनीति–सिद्धांत से जुड़े व्यापक प्रतिमान में, शैल्डन वॉलिन के अनुसार, निम्नलिखित बातें हैं :

i) व्यापक राजनीति–सिद्धांत प्रजा से संबंधित विषयों पर विश्वसनीय जानकारी, विश्वास हेतु एक बुद्धिसंगत आधार स्थापित करने के लिए एक मीमांसात्मक अनुसरण; कार्रवाई हेतु एक बुद्धिसंगत आधार स्थापित करने के लिए एक राजनीतिक रूप से प्रेरित अनुसरण पर अभिलक्षित है।

ii) उसने राजनीतिक को जनता, जनसाधारण के साथ पहचानने का प्रयास किया : ग्रीक *पॉलिज़*, रोमन *रैस पब्लिका*, और *कॉमनवील* का मध्ययुगीन प्रयोग सभी उसकी भागीदारी का संकेत करते थे जो साझीदारों के रूप में लोगों के बीच सर्वमान्य था।

iii) इसकी मूल विश्लेषण इकाई हमेशा राजनीतिक समष्टि, निकाय–नीतिक, रही, कार्यकलाप, संबंध, व विश्वास का संकेत करने अन्तर्सम्बंध प्राधार : *कार्यकलाप* व्यवस्था, युद्ध, शिक्षा, धार्मिक प्रथाओं से जोड़कर; *संबंधों* में उन्हें शामिल करते हुए जो सामाजिक वर्गों के बीच, शासकों व शासितों के बीच, उत्कृष्टों व निकृष्टों के बीच थे; *विश्वास*, जैसे कि न्यायशीलता, समानता, प्राकृतिक नियम, इत्यादि।

iv) अपने आपको राजनीतिक समष्टि से जोड़ते हुए, व्यापक राजनीति–सिद्धांत ने व्यवस्था, संतुलन, साम्य, व साम जस्य पर ज़ोर दिया। यही कारण है, उसे इस प्रक्रिया में, संघर्षों, अराजकता, अस्थिरता व क्रांति जैसी शर्तों से जूझना पड़ा।

v) व्यापक राजनीति–सिद्धांत ने राजनीतिक दृश्यघटना की एक अधिक विस्तृत व्याख्या और विकल्पों की वृहत्तर श्रेणी प्रदान करने हेतु तुलनात्मक अध्ययनों पर दबाव दिया। यही कारण था कि व्यापक राजनीति–सिद्धांत ने राजनीतिक स्वरूपों का एक वर्गीकरण (उदाहरणार्थ, राजतंत्र, अभिजात तंत्र, लोकतंत्र, व उनके रूपान्तर) तथा कानून, नागरिकता, न्यायशीलता, व भागीदारी

जैसी संकल्पनाओं का एक वर्ग विकसित किया ताकि उनके बीच भेद व समानताओं की व्याख्या की जा सके।

vi) व्यापक राजनीति–सिद्धांत, आमतौर पर, मनोगत दृश्य में नीतिविज्ञान रहा था। इसकी प्रतिक्रिया एक नैतिक दृष्टिकोण में प्रकट हुई थी : प्लेटो ने आदर्श राज्य की; अरस्तु ने एक राज्य की जो यथासंभव सर्वोत्तम साधित कर सके; संत औगस्तीन ने ईश्वरीय नगर की वकालत की। व्यापक राजनीति–सिद्धांत ने विभिन्न सांवैधानिक रूपों के मूल्य निरूपण का काम हाथ में लिया, जिससे परिस्थितियों के एक वर्ग विशेष हेतु सर्वाधिक उपयुक्त रूप निश्चित कर सकें, और यदि कोई हो, यथासंभव सर्वथा सर्वोत्तम रूप तय कर सकें।

vii) व्यापक राजनीति–सिद्धांत ने, आदर्श रूप में राजतंत्र के सर्वोत्तम रूप को उभारते हुए, व्यापक सैद्धांतीकरण की निर्भीकता और आमूल परिवर्तनवाद को उजागर किया, हालाँकि कुल लोगों ने इस प्रकार के प्रयास को मात्र कल्पना लोकी और अवास्तविक करार देकर खारिज कर दिया।

1-4-2 vk/kqfud jktuhfr&fl)kr

आधुनिक राजनीति–सिद्धांत अपने अन्दर विविध प्रवृत्तियों का एक जमघट लगाए रखता है, जैसे कि सांस्थानिक–प्राधारिक, वैज्ञानिक, प्रत्यक्षवाद संबंधी, आनुभविक, व्यावहारिक, व्यवहारोत्तर एवं मार्क्सवादी। बीसवीं शती के वृहत्तर भाग पर ये प्रवृत्तियाँ हावी थीं। व्यापक राजनीति–सिद्धांत, आमतौर पर, मीमांसात्मक, नियामक, आदर्शवादी था, और काफ़ी हद तक, ऐतिहासिक; आधुनिक राजनीति–सिद्धांत को, दूसरी ओर, दो परस्पर–विरोधी वर्गों में विभाजित किया जा सकता है : एक ओर उदारवादी, जिसमें व्यक्तिवादी, संभ्रांत वर्गवादी व बहुवादी आते हैं, तथा दूसरी ओर, मार्क्सवादी, जिसमें द्वंद्वात्मक–भौतिकवादी अथवा अन्य शामिल हैं।

आधुनिक राजनीति–सिद्धांत ने, 15वीं–16वीं शताब्दियों से उदारवादी दृष्टिकोण से प्रारम्भ कर और बाद में स्वयं को सांस्थानिक–प्रत्यक्षवादी, आनुभाविक–व्यावहारिक व व्यवहारोत्तर प्रवृत्तियों में अभिव्यक्त करते हुए, सम्पूर्ण व्यापक परम्परा को निष्प्रभ बताया। उनके पक्षधर, मैरियम व की से लेकर डाल, कैसवैल व ईस्टन तक, 'भूत' की बजाय 'वर्तमान' पर; 'निष्प्रभ' की बजाय 'जीवित'; 'दूरस्थ' की बजाय 'निकटस्थ'; 'आत्मनिष्ठ की बजाय 'वस्तुनिष्ठ'; 'मीमांसात्मक' की बजाय 'विश्लेषणात्मक'; 'वर्णनात्मक' की बजाय 'व्याख्यात्मक'; 'प्रयोजन–मूलक' की बजाय 'प्रक्रिया–मूलक'; 'सैद्धांतिक' की बजाय 'वैज्ञानिक' पर ज़ोर देने का प्रयास करते थे। अपने पश्चिमी उदारवादी–लोकतांत्रिक आभास वाले आधुनिक राजनीति–सिद्धांत ने राजनीति का एक विज्ञान बनाने का प्रयास किया; वस्तुनिष्ठ, आनुभाविक, प्रेक्षणीय, परिमेय संक्रियात्मक तथा मूल्य–मुक्त। इसके अभिलक्षण निम्न प्रकार से सारबद्ध किए जा सकते हैं :

i) तथ्य व आँकड़े अध्ययन हेतु आधार तैयार करते हैं। ये संचित किए जाते हैं, स्पष्ट किए जाते हैं और तब प्राक्कल्पना परीक्षण हेतु प्रयोग किए जाते हैं।

ii) मानव व्यवहारों का अध्ययन किया जा सकता है, और मानव व्यवहार की नियमितताएँ सामान्यीकरण में अभिव्यक्त की जा सकती हैं।

iii) आत्मनिष्ठता वस्तुनिष्ठता का; मीमांसात्मक निर्वचन विश्लेषणात्मक व्याख्या का; प्रक्रिया प्रयोजन का; प्रेक्षणात्मक वर्णनात्मक का; और वैज्ञानिक नियामक का मार्ग प्रशस्त करता है।

iv) तथ्यों व मूल्यों को अलग किया जाता है; मूल्यों को इस प्रकार व्यवस्थित किया जाता है कि तथ्य प्रासंगिक हो जाएँ।

v) कार्य–प्रणाली को आत्म–सचेत, सुव्यक्त और परिमाणात्मक होना पड़ता है।

vi) अन्तरानुशासिक संश्लेषण लाना होता है।

vii) ''यह जो है'' को ''यह जो था'' अथवा ''यह जो होना चाहिए या हो सकता था'' की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण समझा जाता है।

viii) मूल्य तथ्यों का, तत्त्व रूप का, और सिद्धांत अनुसंधान का, व यथापूर्व स्थिति सामाजिक परिवर्तन का समर्थन करने के लिए हैं।

आधुनिक राजनीति–सिद्धांत के दूसरे छोर पर खड़ा है मार्क्सवादी राजनीति–सिद्धांत जिसे द्वंद्वात्मक–भौतिकवादी अथवा वैज्ञानिक–समाजवादी सिद्धांत भी कहा जाता है।

यह सभी दृश्यघटनाओं के विकास में गति के सामान्य नियमों की व्याख्या करता है। इसका महत्त्व विरोधियों के बीच संघर्ष के माध्यम से परिवर्तन में निहित होता है; उत्पादन का एक बेहतर ढंग अपनाने की दृष्टि से उत्पादन व उत्पादक बलों के संबंधों के बीच; निचले स्तर से ऊँचे स्तर, या कहें, पूँजीवाद संबंधी से समाजवाद–संबंधी की ओर तथा समाजवाद–संबंधी से सम्प्रदायवाद–संबंधी की ओर विकास। यह एक ऐसा सिद्धांत है जो सामाजिक व राजनीतिक परिवर्तन का विश्लेषण व उसकी व्याख्या करने हेतु एक व्यवस्थापक व वैज्ञानिक ढाँचा प्रदान करता है। यह अतीत की व्याख्या करने, वर्तमान को समझने, तथा भविष्य की प्रकल्पना करने का एक तरीका है।

1-4-3 ledkyhu jktuhfr&fl)kr

समकालीन राजनीति–सिद्धांत के विशेषतासूचक अभिलक्षणों पर प्रकाश डालते हुए, डैविड हैल्ड निम्न का संदर्भ देते हैं :

i) समकालीन राजनीति–सिद्धांत को राजनीतिक विचार के रूप में देखा गया है, जिसमें उनके ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विषय–वस्तु के महत्त्व को जाँचने का प्रयास शामिल है।

ii) उसने संकल्पनात्मक विश्लेषण के रूप में इस अनुशासन को पुनर्जीवन युक्त करने, और इस प्रक्रिया में, सर्वसत्ता, लोकतंत्र, न्यायशीलता आदि जैसे मुख्य रूपों व संकल्पनाओं के अभिप्रायों पर एक व्यवस्थापरक कटाक्ष, और इन अभिप्रायों का वर्गीकरण खोजने का प्रयास किया है।

iii) इसको हमारे नैतिक व राजनैतिक कार्यकलापों के निहित प्राधार की व्यवस्थापरक विशद व्याख्या; राजनीतिक मूल्य की बुनियादों के प्रकटन, परीक्षण व पुनर्निर्माण के रूप में विकसित किया गया है।

iv) इसको दुर्बोध सैद्धान्तिक प्रश्नों एवं विशिष्ठ राजनीतिक विषयों से संबंधित एक प्रकार के तर्क के रूप पुनर्जीवन युक्त किया गया है।

v) इसका आधारीकरणवाद के सभी रूपों की आलोचना के रूप में समर्थन किया गया है, चाहे पश्च–आधुनिकतावादी हों या उदारवादी त्राता। यह, यथानुसार, अपने आप को मनुष्यों के बीच संलाप और संवाद हेतु एक उद्दीपक के रूप में प्रस्तुत करता है।

vi) इसकी सैद्धांतिक अर्थशास्त्र, बुद्धिवादी विकल्प सिद्धांत व नीति सिद्धांत द्वारा प्रभावित व्यवस्थापक आदर्श निर्माण के एक रूप में विशद व्याख्या की गई है; इसका लक्ष्य है राजनीतिक प्रक्रियाओं के स्पष्ट और निश्चित प्रतिरूपों का निर्माण करना।

vii) इसको राजनीति–विज्ञान के शिक्षण के सैद्धांतिक उद्यम के रूप में विकसित किया गया है। इस प्रकार यह प्रेक्षण व शिष्ट आनुभविक सामान्यीकरण के आधार पर सिद्धांत को रचने का प्रयास करता है।

समकालीन राजनीति–सिद्धांत मुख्यतः व्याख्या, अन्वेषण से और अन्तोगत्वा, उसके बोध से संबंधित है जो राजनीति : संकल्पनाओं, सिद्धांतों व संस्थाओं, से संबंध रखता है। ब्रियान बैरी (*पॅलिटिकॅल आर्ग्युमेण्ट,* 1965) का कहना है कि राजनीति–सिद्धांत ''सिद्धांतों व संस्थाओं के बीच संबंध का अध्ययन'' करने का प्रयास करता है। जॉन रौल्स (*ए थिअरी ऑफ जस्टिस,* 1971) का विचार है कि राजनीति–सिद्धांत वैज्ञानिक–आनुभविक तरीकों के साथ–साथ सत्य को भी तलाश सकता है। रॉबर्ट नॉज़िक (*ऐनॅर्कि, स्टेट एण्ड यूटोपिअॅ,* 1974) का विश्वास है कि समकालीन राजनीति–सिद्धांत व्यापक साध्यों को आनुभविक साधनों से जोड़कर अनेक राजनीतिक समस्याओं को हल कर सकता है। सर्वसम्मति, उदाहरण के लिए, (जॉन प्लैमेनात्ज़, *डिमोक्रेसी एण्ड इलूज़न,* 1973) यह है कि एक तार्किक व नैतिक लक्षण के अनुभाविक विश्लेषण व प्रकटन राजनीति–सिद्धांत में यह अस्तित्व रख सकते हैं।

डैविड हैल्ड यह कहते हुए सार प्रस्तुत करते हैं कि समकालीन राजनीति–सिद्धांत हैः ''प्रथम, *मीमांसात्मक* सम्बद्ध, सर्वोपरि, *संकल्पनात्मक* और *नियामक* के साथ, द्वितीय, *आनुभाविक–विश्लेषणात्मक* संबद्ध, सर्वोपरि बोध व व्याख्या की समस्याओं के साथ; तृतीय, *सामरिक*–संबद्ध, सर्वोपरि, *हम जहाँ हैं से हम जहाँ होना पसंद करेंगे की ओर गमन* की साध्यता–निर्धारण के साथ। इनमें जोड़ना होगा, ऐतिहासिक, राजनीतिक कथन के बदलते अर्थ की जाँच उसके मुख्य प्रत्यय, सिद्धांत, व महत्त्व समयोपरि।''

1-5 jktuhfr&fl)kr dk v/;;u D;k dj\

राजनीति–सिद्धांत कोई सरल व सहज उद्यम नहीं है। यह राजनीति की एक बेहतर दुनिया बनाने पर अभिलक्षित, एक विशद व सुसंगत अभ्यास है। राजनीति–सिद्धांत में दर्शन व विज्ञान को कोई विशेषाधिकृत संज्ञानात्मक पद प्राप्त नहीं है। सम्पूर्ण राजनीति–दर्शन राजनीतिक संसार के संचालन के बारे में दावे करता है पूछताछ के प्रतिमान के भीतर विस्तृत जाँच की दरकार वाले वे अधिकार जो उनकी पहुँच से बाहर हैं, जो सिर्फ़ दर्शन हेतु उपलब्ध हैं। सम्पूर्ण राजनीति–विज्ञान उन नियामक प्रश्नों को उठाता है जिनका नियामक–व्याख्यात्मक के प्रति कोई समर्पण–भावना निराकरण नहीं करती है। राजनीति–सिद्धांत के लिए आवश्यक हैं संकल्पनाओं व सिद्धांतों का दर्शनात्मक विश्लेषण, और राजनीतिक प्रक्रियाओं व प्राधारों की आनुभाविक समझ। न तो दर्शन न ही विज्ञान, अपनी वैयक्तिक क्षमता में, राजनीति–सिद्धांत के प्रकटन में 'एक–दूसरे का स्थान सहज ही ले सकते हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि राजनीतिक जीवन की बानगियों के बारे में सामान्यीकरण निहित सुव्यवस्थित राजनीतिक जानकारी संभव है, और उसे प्राप्त करने संबंधी प्रयास ही राजनीति–सिद्धांत के मुख्य कार्य हैं, प्रत्युत होने चाहिए।

राजनीति–सिद्धांत एक शास्त्र विद्या से कहीं अधिक है; यह एक प्रज्ञात्मक अभ्यास है जैसे कि एक कार्यकलाप भी होता है। इसकी आवश्यकता एक दर्शन के रूप में ठीक वैसे ही होती है, जैसे एक विज्ञान की। जर्मिनो ने उचित ही लिखा है : ''विकृतियों, अति–सरलीकरण, नारेबाज़ी व जनोत्तेजना कार्य के मुँह फेर कर, राजनीति–सिद्धांती मनुष्य और समाज में उसके अस्तित्व के सामने खड़ी चिरस्थायी समस्याओं पर ईमानदारी के साथ स्पष्ट बोलता है। राजनीति–सिद्धांत एक दर्शन के रूप में हर परिस्थिति में सत्य को खोजने का प्रयास करेगा, और एक विज्ञान के रूप में, सत्य तक पहुँचेगा। प्लैमेनात्ज़ दृष्टिकोण रखते हैं कि राजनीति–सिद्धांत अतिकल्पना अथवा पूर्वाग्रहों का प्रदर्शन नहीं है, न ही कोई प्रज्ञात्मक क्रीड़ा है। तथापि यह थोड़ा ''कुछ–कुछ भाषा विषयक विश्लेषण है'', बल्कि ''एक विशद, यथार्थ, दुष्कर व सुयोग्य व्याख्या है'', और ''उतना ही आवश्यक है जितना कि कोई भी विज्ञान''।

1-5-1 राजनीति-सिद्धांत के समक्ष कार्य

राजनीति–सिद्धांत के सामने निर्णायक कार्य होते हैं। एक विज्ञान के रूप में, डैविड हैल्ड स्पष्ट करते हैं, उसके निम्नलिखित प्रकार्य हैं :

i) ''महत्त्वपूर्ण राजनीतिक परिवर्तियों को पहचानना और उनके परस्पर संबंधों की व्याख्या करना। इसको सुनिश्चित करने के लिए, एक विश्लेषणात्मक योजना आवश्यक है। यह अनुसंधान को सार्थक बनाएगा और सामान्यीकरणों की ओर प्रवृत्त तथ्यों को व्यवस्थित करेगा।

ii) किसी सैद्धान्तिक ढाँचे पर, क्षेत्र में श्रमिकों का अस्तित्व, तथा व्यापक स्वीकरण व उनके द्वारा सर्वसम्मति विभिन्न अनुसंधानों के परिणामों की तुलना किए जाने में उन्हें समर्थ करेंगे। यह पूर्व अनुसंधानों द्वारा निकाले गए निष्कर्षों को प्रमाणित करने में मदद करेगा और यह अनुसंधान के उन क्षेत्रों को भी उजागर कर सकता है, जिन्हें आनुभविक कार्य की आवश्यकता है।

iii) अन्ततः, एक सैद्धान्तिक ढाँचे की विद्यमानता, अथवा कम से कम, संकल्पनाओं का एक अपेक्षाकृत सुसंगत निकाय, अनुसंधान को अधिक भरोसेमंद बनाते हुए।''

एक दर्शन के रूप में, राजनीति–सिद्धांत को विज्ञान की पहुँच से परे जाना पड़ता है। एक विज्ञान, एक दृश्यघटना के रूप में इसको *अध्ययन* करना पड़ता है, परन्तु एक दर्शन के रूप में इसको दृश्यघटना *समझनी* पड़ती है। इसको *समष्टि* के साथ–साथ एक *अवयव* का अध्ययन करना पड़ता है। इसका अध्ययन वर्तमान को स्पष्टतः जानने तक सीमित नहीं है, वरन् इसको अपना क्षेत्र मसलन यह जानने के लिए विस्तीर्ण करना पड़ता है कि वर्तमान किसके लिए विद्यमान है। तदनुसार, राजनीति–सिद्धांत को *यथापूर्व स्थिति* के अध्ययन से ऊपर उठना पड़ता है; इसको वर्तमान से परे जाना पड़ता है, भविष्य के क्षेत्र में गहरे।

राजनीति–सिद्धांत के सामने काम विशाल और पार्थक्यसूचक हैं। इनमें से कुछ हैं :

i) रौल्स के पक्ष में, राजनीति–सिद्धांत को नीति दर्शन की एक शाखा के रूप में अनिवार्यतः नियामक बताया गया। तदनुसार, राजनीति–सिद्धांत का कार्य सिर्फ़ सामाजिक प्राधार के मूल्यांकन हेतु सामान्य नियम विकसित करना ही नहीं है, बल्कि उचित संस्थाओं, कार्यविधियों, व नीतियों की रूपरेखा प्रस्तुत करना भी हैं (देखें ऐकरमैन, *सोशल जस्टिस इन द लिबरल स्टेट,* 1980; बैरी, *ए ट्रीटाइज़ ऑन सोशल जस्टिस,* 1989; तथा बीट्ज, *पॅलिटिकॅल थिअरी एण्ड इण्टरनैशनल रिलेशन्ज़,* 1979)।

ii) राजनीति–सिद्धांत मुख्य तौर पर चिन्तनशील और आमतौर पर मानव के अस्तित्व को समझने से जुड़ी एक विचारशील जाँच है।

जिस किसी प्रकार भी समझा जाए, राजनीति–सिद्धांत न तो नीति दर्शन की कोई शाखा है, न ही अपने रूझान में नियामक (देखें टेलॅर, *फ़िलॅसॉफ़िकल पेपर्स,* 1985; मैकइनटायर, *आफ़्टर व़रच्यू,* 1981; कॅनॉली, *पॅलिटिकॅल थिअरी एण्ड मार्डनिटी,* 1988)।

iii) राजनीति–सिद्धांत मुख्य रूप से एक समुदाय विशेष के स्वयं–बोध को व्यक्त करने से संबंधित है, तथा इस प्रकार यह अनिवार्यतः अपने कार्यक्षेत्र में नगरीय और दिक्विन्यास में व्याख्यात्मक है (देखें वाल्ज़र, *स्फ़िॲर्ज़ ऑफ जस्टिस,* 1983)।

iv) राजनीति सिद्धांत को प्रायोगिक, अन्वेषी, संवादात्मक, उदारमति, व्यंग्यात्मक व सुग्राही होना ज़रूरी है (देखें रॉस्टी, *कॅण्टिन्जॅन्सि, आइरॅनि एण्ड सॉलिडैरिटि,* 1989)।

1-5-2 jktuhfr&fl)kr dk egÙo

राजनीति–सिद्धांत के महत्त्व को विद्वानों द्वारा अविश्वास के साथ देखा गया है, जिनमें अधिकांश व्यवहारवादी विचार पद्धति के हैं। जॉन प्लैमेनात्ज़, ''*दि ईज़ ऑफ पॅलिटिकॅल थिअरी*'' नामक अपने निबंध में सहमत नहीं है। चूँकि वह लिखते हैं : ''राजनीति–दर्शन (यहाँ राजनीति–सिद्धांत के अर्थ में) मर चुकी है, मैंने लोगों को कहते सुना है, उन तर्कमूलक प्रत्यक्षवादियों व उनके उत्तरवादियों द्वारा मारा गया जो दिखा चुके हैं कि इन समस्याओं में से कई जो अतीत के महान् राजनीतिक विचारकों को चिन्ता में डालती हैं, दृष्टि–संभ्रमों व भाषा के दुरुपयोग पर आधारित मिथ्या हैं''। उनके अनुसार, राजनीति–सिद्धांत के अपने प्रयोजन हैं, जो निम्नलिखित रूप में कहे जा सकते हैं :

i) राजनीति–सिद्धांत एक गंभीर व जटिल प्रज्ञात्मक कार्यकलाप है और इस प्रकार के व्यवहार हेतु आवश्यकता, आधुनिक युग में, वस्तुतः कहीं अधिक है;

ii) यह मूल्यों, मानदण्डों व लक्ष्यों का एक अध्ययन है, यद्यपि यह ठीक वैसी जानकारी प्रस्तुत नहीं करता, जैसी कि आनुभविक राजनीति–सिद्धांत करता है;

iii) यह उन सिद्धांतों का एक अध्ययन है जिन्होंने, ऐतिहासिक रूप से, सशक्त रूप से मनुष्य की स्वयं की, व समाज की छवियों को प्रभावित किया है, और उनके सामाजिक व राजनीतिक व्यवहार को गंभीरता से निर्धारित किया है।

iv) इसमें सामाजिक रूप से अनुकूलित विचारधारा का एक तत्त्व है। यह विचारधारा एक दृष्टिभ्रम हो सकती है, और फिर, जब तक कि मनुष्य को ये दृष्टिभ्रम न होते, सामाजिक विकास का पथ वो न होता जो है; तथा

v) यह राजनीति–सिद्धांतों की एक संसक्त व्यवस्था बनाता है जो हमें एक उचित राजनीतिक कार्रवाई हेतु मार्गदर्शन कर सकता है। इसके राजनीति–सिद्धांती, जैसा कि प्लैमेनात्ज़ कहते हैं, ''निष्कपट दुकानदारों की भाँति, विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ, उन सबका ठीक–ठीक वर्णन करते हुए और यह ग्राहक पर छोड़ते हुए कि उसे सबसे अच्छा क्या लगता है, प्रदर्शित करता है। वे सिद्धांतों का एक तारतम्य पैदा करते हैं, और यह स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं कि मनुष्य अपने

विकल्पों को चुनने के लिए उनका किस प्रकार प्रयोग करे ... वे विचारों के मात्र रसद–दारोगा नहीं हैं; वही उपदेशक व प्रचारक हैं।''

सी. राइट मिल्ज़ (द *मार्क्सिस्टस्,* 1962) लिखते हैं, ''राजनीतिक मीमांसाएँ प्रज्ञात्मक व नैतिक रचनाएँ हैं। उनमें उच्च विचार, सरल आदर्श वाक्य, संदिग्ध तथ्य, अपक्व प्रचार व परिष्कृत सिद्धांत शामिल हैं।'' वह राजनीति–सिद्धांत के महत्त्व की यह कहते हुए व्याख्या करते हैं :

i) ''प्रथमतः, यह स्वयं ही एक सामाजिक सच्चाई है; यह इस लिहाज से एक विचारधारा है कि कुछ संस्थाएँ व प्रथाएँ सही ठहराई जाती हैं तथा अन्य पर आक्षेप लगाया जाता है; यह शब्द प्रयोग शैलियाँ प्रदान करता है, जिसमें माँगें उठायी जाती हैं, आलोचनाएँ की जाती हैं, परामर्श दिए जाते हैं, घोषणाएँ सूत्रबद्ध की जाती हैं, और यदाकदा, नीतियाँ निर्धारित की जाती हैं।

ii) दूसरे, यह एक आचार नियमावली आदर्श है, जो सामान्यतः व कृत्रिमता के विभिन्न स्तरों पर मनुष्य, घटनाओं व आन्दोलनों की परखने में और आकांक्षाओं व नीतियों हेतु लक्ष्यों व दिशा निदेर्शों के रूप में प्रयोग की जाती है।

iii) तीसरे, यह कर्म के, सुधार, क्रांति व परिरक्षण के साधनों के अभिलक्षणों को नामोद्दिष्ट करता है। इसमें वे रणनीतियाँ व कार्यक्रम शामिल हैं, जो साध्यों व साधनों दोनों को प्रस्तुतः करते हैं। संक्षिप्ततः यह उन ऐतिहासिक स्तरों को अभिहित करता है, जिनके द्वारा आदर्शों पर विजय प्राप्त करनी होती है अथवा उन्हें जीत लेने के बाद कायम रखना होता है।

iv) चौथे, इसमें मनुष्य, समाज, व इतिहास के सिद्धांत सम्मिलित हैं, अथवा कम से कम इस बारे में कल्पनाएँ कि इनसे मिलकर समाज कैसे बना है, और यह कैसे कार्य करता है। यह बताता है वह किस प्रकार ढूँढें कि हम कहाँ खड़े हैं, और कहाँ हम संभवतः जा रहे हैं।''

राजनीति–सिद्धांत उस संसार को पूरी तरह समझने पर अभिलक्षित है, जिसमें यह जन्म लेता है। यह इसके मुख्य लक्षण को पहचानने, इसके संकट को समझने का प्रयास करता है तथा उस संकट का समाधान करने हेतु इसकी क्षमता का निर्धारण करता है। राजनीति–सिद्धांत मनुष्य को स्वयं को और स्वयं के बाद, उसके राजतंत्र व उसके इतिहास को समझने की क्षमता में योगदान देता है। यह मनुष्य को अपने निजी सामान्य कामों का नियंत्रण अपने हाथ में लेने को प्रेरित करता है। संक्षेप, यह स्पष्ट करता है, समझाता है, समझता है, मूल्यांकन करता है, जानकारी देता है और अदल–बदल करता है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि राजनीति–सिद्धांत उच्चतम राजनीतिक व्यवस्था का एक आदर्श खड़ा करता है, विधिवत् संचयन हेतु एक मार्गदर्शक के रूप में काम करता है और राजनीतिक आँकड़ों का एक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। एक विज्ञान के रूप में, राजनीति–सिद्धांत राजनीतिक यथार्थता की व्याख्या उस बात पर निर्णय लेने की चेष्टा किए बग़ैर करता है जिसका वर्णन किया जा रहा है। एक दर्शन के रूप में, यह उन आचार–नियमों की व्याख्या करता है, जो सभी के लिए उत्तम जीवन सुनिश्चित करने में मदद करते हैं।

1-6 lkjk'k

राजनीति–सिद्धांत एक परिकल्पना है, जो कि जो भी 'राजनीतिक' है से जुड़ा है, यानी किसी ऐसी चीज़ का दर्शन व विज्ञान जो 'राजनीतिक' है। सैबाइन, मोटे तौर पर राजनीति–सिद्धांत को राजनीति

के विषय में अथवा राजनीति से सम्बद्ध कुछ भी के रूप में परिभाषित करते हैं। राजनीति–सिद्धांत की एक अधिक विस्तीर्ण परिभाषा ब्लूहैन द्वारा दी गई है। वह कहते हैं, ''... राजनीति–सिद्धांत इस बात की एक व्याख्या है कि राजनीति समग्रतः क्या है, राजनीति जगत् की आम समझ, एक आचार–विचार संबंधी मानक। इसके बग़ैर, हमें घटना को मान्यता नहीं देनी चाहिए, यह क्यों हुई का निर्णय नहीं करना चाहिए, यह अच्छी थी या बुरी का फैसला नहीं करना चाहिए, आगे क्या होने वाला था का निश्चय नहीं करना चाहिए ...।''

राजनीति–सिद्धांत इतिहास है जहाँ कि यह तथ्यों पर आधारित है; यह दर्शन है जहाँ तक कि यह दृश्यघटना का मूल्यांकन करता है; यह विज्ञान है जहाँ तक कि यह चीज़ों की व्याख्या वैज्ञानिक रूप से करता है।

राजनीति–सिद्धांत अपने नियामक अतीत से अपने वैज्ञानिक वर्तमान तक विकसित हुआ है। यह भविष्य में इतिहास, दर्शन व विज्ञान, तथा मानकीवाद व अनुभववाद का एक संयोजन बनने की ओर अग्रसर है।

राजनीति–सिद्धांत सिर्फ़ एक दृष्टिभ्रम नहीं है; यह निष्प्राण नहीं है। इसकी प्रासंगिकता इसके एक व्यावहारिक कार्यकलाप होने में है। यह न सिर्फ़ आदमी, समाज अथवा इतिहास की परिकल्पना प्रस्तुत करता है, बल्कि हमें कर्म का एक सिद्धांत भी देता है– सुधार, क्रांति अथवा परिरक्षण।

1-7 vH;kl

1. 'सिद्धांत' शब्द से क्या तात्पर्य है?
2. राजनीति–सिद्धांत क्या है?
3. आपकी राय में, राजनीति–सिद्धांत की विषयवस्तु क्या होनी चाहिए?
4. राजनीति–सिद्धांत, राजनीति–दर्शन और राजनीति–विज्ञान के बीच अंतर स्पष्ट करें।
5. क्या आप इतिहास के बिना राजनीति–सिद्धांत को समझ सकते हैं?
6. राजनीति–सिद्धांत दर्शनशास्त्र व विज्ञान की विषयवस्तु को कैसे संसाधित करता है?
7. व्यापक राजनीति–सिद्धांत की महत्त्वपूर्ण विशेषताओं का उल्लेख करें।
8. आधुनिक राजनीति–सिद्धांत के मुख्य अभिलक्षणों को स्पष्ट करें।
9. उन विस्तृत विषयवस्तुओं को संक्षेप में बताएँ, जिनसे समकालीन राजनीति–सिद्धांत सम्बद्ध है।
10. आपकी राय में, राजनीति–सिद्धांत के सामने मुख्य काम क्या हैं?
11. राजनीति–सिद्धांत के महत्त्व का संक्षिप्त में वर्णन करें।